E-content for student of Patliputra University Patna.I

Course-B.A.HONOURS Part-1

Subject Hindi, Paper-2 गद्य विधाएं चंद्रगुप्त नाटक

Topics/Heading-पठित चंद्रगुप्त नाटक के ऐतिहासिक नाटककार जयशंकर प्रसाद के नाटकों की विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

-डॉ प्रफुल्ल कुमार एसोसिएट प्रोफेसर अध्यक्ष हिंदी विभाग आर आर एस कॉलेज मोकामा पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना

प्रसाद ने भारतेंदु द्वारा स्थापित नाटक और रंगमंच की परंपरा को नया जीवन और नई दिशा प्रदान की। प्रसाद ने साहित्यिक रंगमंच की स्वयं कल्पना की और उस मानसिक रंगमंच की पृष्ठभूमि में ही नाटक लिखे, परंतु उसे व्यावहारिक रूप नहीं दे सके। हिन्दी नाटक और रंगमंच की अन्य सभी दृष्टि से उत्कृष्ट होने के बावजूद अभिनय की दृष्टि से उनके नाटक असफल रहे।उन्होंने अपने काल में ऐतिहासिक नाटक

विशाख,अजातशत्रु,जनमेजय का नागयज्ञ,राज्यश्री,स्कन्दगुप्त ध्रुवस्वामिनी,चंद्रगुप्त आदि नाटक लिखा।

प्रसाद जी मुख्यतः ऐतिहासिक नाटककार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। वह रोमानी प्रकृति के कवि थे ।अतः उन्होंने देश के गौरव में अतीत को अपने नाटकों का विषय बनाया ।उनके नाटकों में पौराणिक युग (जनमेज़य का नागयज्ञ) से लेकर हर्षवर्धन युग (राज्यश्री) तक के भारतीय इतिहास की गौरवमयी झांकी देखने को मिलती है। शायद ही हिन्दी साहित्यके किसी अन्य लेखक ने भारतीय संस्कृतियों की समृद्धशाली शक्ति और औदात्य का ऐसा आकर्षक चित्र प्रस्तुत किया। उनके नाटकों के चरित्र शील, शक्ति और औदात्य के सजीव विग्रह हैं।

सभी नाटकों के इतिहास प्रसिद्ध पात्रों में नया जीवन भर दिया गया है। गौतम बुद्ध,चाणक्य,स्कंदगुप्त,चंद्रगुप्त

राज्यश्री, ध्रुवस्वामिनी आदि ऐतिहासिक पात्रों के जो रूप प्रसाद के नाटकों में उभरे हैं, वह सजीव होकर हमारे सामने उपस्थित हुए हैं। इतिहास अपने को दोहराता है, इस उक्ति का उन्होंने बड़ा सुंदर उपयोग अपने नाटकों में की है। उनका नाटक ध्रुवस्वामिनी में युगीन समस्याओं का ऐसा समावेश हुआ है कि वह ऐतिहासिक नाटक न रह कर समस्या नाटक बन गया है।

प्रसाद के नाटकों में शिल्प पर कई तरह के प्रभाव दिखाई पड़ते हैं।वह संस्कृत नाट्य साहित्य, अंग्रेजी नाट्य साहित्य से प्रभावित थे।वह शेक्सपीयर,इब्सन,शॉ,आदि से प्रभावित थे। ध्रुवस्वामिनी में उस प्रभाव की कुछ झलक देखी जा सकती है। कलात्मक उत्कर्ष की दृष्टि से प्रसाद के प्रमुख नाटक 3 हैं- चंद्रगुप्त स्कन्दगुप्त और ध्रुवस्वामिनी ।

स्कंदगुप्त में समृद्धि और ऐश्वर्य के शिखर पर आसीन गुप्त साम्राज्य की उस स्थिति का चित्रण है जहाँ आंतरिक कलह पारिवारिक संघर्ष और विदेशी आक्रमणों के फलस्वरूप उसके भावी क्षय के लक्षण प्रकट होने लगे।

विषय और रचना शिल्प दोनों की दृष्टि से यह प्रसाद का सर्वश्रेष्ठ नाटक माना जाता है। भारतीय और पाश्चात्य नाटक पद्धतियों का इतना सुंदर समन्वय उनके अन्य किसी नाटक में नहीं मिलता है।

चंद्रगुप्त की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें विदेशियों से भारत के संघर्ष और उस संघर्ष में अंततः भारत की विजय की विषयवस्तु उठाई गई है। प्रसाद के मन में भारत की पराधीनता को लेकर गहरी व्यथा थी और ऐसा लगता है जैसे उन्होंने एक ऐतिहासिक प्रसंग के माध्यम से अपने इच्छित विश्वास को वाणी दी हो ।इस दृष्टि से स्कंद गुप्त को भी अधिक उदात्त चंद्रगुप्त की कथावस्तु है।चाणक्य, चंद्रगुप्त ,मालविका कालिया आदि के रूप में उन्होंने अनेक प्रभावशाली चरित्र दिए परंतु शिल्प की दृष्टि से यह अपेक्षाकृत शिथिल रचना है। इसकी कथा में वह संगठन संतुलन और एकतानता नहीं है, जो स्कंद गुप्त में है। अंकों और दृश्यों का विभाजन भी असंगत है। नाटकीय अन्वितियों की अवहेलना चंद्रगुप्त में सीमातिक्रमण कर गई है। फिर भी चंद्रगुप्त हिंदी की

एक श्रेष्ठ नाट्य कृति है। प्रसाद की प्रतिभा ने इसकी त्रुटियों को ढंक दिया है।

ध्रुवस्वामिनी मूलतः ऐतिहासिक नाटक है परंतु समस्या प्रमुख रूप में है। इसमें तलाक और पुनर्विवाह की समस्या को बड़े कौशल के साथ उठाया गया है ।लक्ष्मी नारायण मिश्र के समस्या न।उससेब तक प्रकाश में आ गए थे।उससे भी वे प्रभावित हुए। ध्रुवस्वामिनी से पता चलता है कि प्रसाद कितने युगधर्मी थे। कामना और एक घूंट भी उनके उल्लेखनीय नाटक हैं। नाट्य शिल्प की दिशा में प्रसाद जी का यह प्रयोग उपेक्षनीय नहीं माना जा सकता है।

प्रसाद जी हर श्रेष्ठ लेखक की तरह प्रयोगधर्मी थे ।

उन्होंने कभी भी अपने आपको नहीं दुहराया । उनके आरंभिक नाटक 1910 से 1915 ईस्वी तक उनकी प्रयोग धर्मिता के प्रमाण हैं ।प्रसाद को जब इन नाटकों से संतोष नहीं हुआ तो उन्होंने अपने परवर्ती नाटकों में विषय और शिल्प दोनों क्षेत्रों में निरंतर प्रयोग किया। प्रसाद को

रंगमंच नहीं मिला इस कारण उनके शिल्प विषयक प्रयोग अंत तक पूर्णतः व्यवहारिक नहीं बन सके फिर भी उन्होंने हिंदी नाटक को उत्कर्ष प्रदान किया और रंगमंच को चुनौती दी। संभव है हिंदी का भावी रंगमंच प्रसाद के नाटकों को सफल और प्रभावशाली मंचन में समर्थ हो सके। आज जब हम नाटक और रंगमंच के क्षेत्र में ध्वनि एवं प्रकाश योजनाओं की उत्कृष्ट तकनीकी का सहारा ले रहे हैं तब प्रसाद के नाटकों का मंचन संभव हो सकता है। कतिपय विशेषताओं के साथ हिंदी साहित्य जगत में प्रसाद के नाटकों का अद्‌वितीय महत्व ह ****